घंटी नहीं रुकता

सूरज की लालिमा धीरे-धीरे पूरे आसमान में फैलने लगा। सूरज की किरणें पड़ने की वजह से उसकी आँखू एक मोती की तरह चमक रहा था। वह आम के पेड़ के नीचे बैठकर रो रहा था। "क्या हुआ सोना? तुम क्यों रो रही हो?" उस मीठी शब्द उसे जगाया। वह तारा थी। उसकी सबसे अच्छी सहेली।

सोना अपनी मुँह उठाया और तारा के तरफ देखने लगा। वह लड़की की आँखों में फैले लालिमा जैसे सागर में डूबते सूरज की समान था। तारा को देखते ही सोना और रोने लगी। यह देखकर तारा उसे शांत करने लगी। "सोना मैं तुम्हारी सबसे अच्छी दोस्त हूँ न? मुझे बताओ तुम्हें किस बात परेशान कर रहा है।" सोना तारा को गला लगाकर अपनी जीवन की कहानी उससे कहती है।

सोना एक गरीब परिवार से है। ~~लेकिन~~ लेकिन

फिर भी उसकी छोटी सी परिवार में खुशी थी। उसकी माँ, बाप और दादीजी से वह बहुत प्यार करती थी। सोना की पापा एक चाय दुकान में काम करता था। सोना हर दिन रात को पापा की छाती पर लेटकर कहानियाँ सुनकर ही सोती थी। उसकी पापा उसे हर दिन नई-नई कहानियाँ सुनाती थी। उस कहानियों में से सोना को एक कहानी बहुत अच्छी लगी थी - परियों की कहानी।

"पापा, क्या परियाँ सच्च में होते है?" एक दिन सोना ने उसकी पापा से पूछा। "हाँ, मेरी लाल, हम सब लोगों के जीवन में किसी न किसी समय पर हम परियों को देख सकते हैं।" पापा ने जवाब दिया। तब सोना की संशय और बढ़ गई और उसने पूछा "यह परियाँ कब आते हैं? मुझे उनको देखना है, पापा।" "मुन्ना, जब हमारी जीवन में किसी तरह के मुसीबतें और संकट होते हैं न, तब यह परियाँ भगवान के प्रतीक होकर हमें बचाते हैं।" पापा की जवाब सुनकर सोना ने कहा पूछा "ठीक है पापा.... लेकिन क्या यह परियाँ को पंख और चमकती कपड़ें होते है?"

सोना की यह निष्कलंक सवाल सुनकर एक मुसकान के साथ पापा कहा "नहीं बेटा... उनको यह पंखों के बदले शुद्ध दिल होती हैं।" "पापा आप क्या कह रहे हो? यह परियाँ क्या सपने में आते हैं?" सोना का अगला सवाल यह था। "नहीं... वह सच्च में होते हैं और हम सभी को एक दिन उनके साथ उनके दुनिया में जाना होगा - जिस दुनिया जहाँ पर कोई दुःख, घृणा नहीं होगी। तुम यह सब बातें समझने केलिए बहुत छोटा हो... घंटी दस बच चुकी हैं तुम्हें सोना चाहिए।" इतना कहकर वह बाप और बेटी खुशी के साथ सोते हैं।

लेकिन वह खुशी कई दिनों तक नहीं रुका। सोना की माँ-बाप एक गाड़ी से टकराकर कोई और दुनिया में चली गई। उस दिन सोना बहुत दुःखी थी। रोते-रोते उसकी आँख लाल हो चुकी थी। पिछले दिन पापा उसे उसकी जन्मदिन पर दिए खूबसूरत घंटी को पकड़कर वह रात तक रोती रही। सोना को पिछले दिन में अपनी पापा उसे कहे शब्द याद आ गई।

पिछले दिन सोना ने उसकी पापा से उनकी सपना के बारे में पूछा। पापा का जवाब यह था, "बेटी मेरी मेरा सपना बस इतना है कि अपनी जीवन तुम एक परी बनो... एक परी जो दूसरों के जीवन को खुशी देता हो।" पापा के मौत के बात सोना यह ही सोचता रहा कि उसे पापा की सपना पूरा करना है।

अपनी माँ-बाप के मौत के बाद उसे सिर्फ उसकी दादी ही थी। दादी के लिए वह सब कुछ करती थी। एक बड़ी बीमारी से थकी दादी को उस दस साल की लड़की ने ही खयाल रखा है। अपनी दादी को की संरक्षण करने केलिए वह दूसरों का मदद नहीं लिया। उसकी पापा उससे कहती थी कि जीवन में किसी भी कठिनाई आए, दूसरों को परेशान मत करना... उस वक्त तुम्हें वह कठिनाई को पार करने केलिए मन में भगवान हिम्मत देखा। इसलिए सोना किसी से मदद नी लिया और वह सुबह पत्र बेचने की काम करती रही। उस काम से मिली पैसे से वह ज़रूरत की सामान ख़रीद ती थी। इस संकट के समय

पर भी अपनी पापा की सपना पूरा करने की विचार थी उसकी मन में।

एक दिन सोना अपनी दादी केलिए चाय बनाती है और वह मेज़ा पर रखकर दादी को उठाने की कोशिश करती है। "दादी उठो न, मैंने आप केलिए चाय बनाई है।" यह कहकर सोना दादी को उठाने की कोशिश करते हैं। लेकिन दादी आँख नहीं खुली। सोना गबराकर उसकी घर की पास रहने वाला भाई को बुलाया। "सोना .... दादी की समय हो गया है। वह तुम्हारी माँ-बाप के दुनिया में अब जीमगा।" अपनी दादी मर गई यह समझने केलिए अ उसे कुछ देर लगी और रोकर आम के पेड़ के नीचे बैठ गई।

"तारा यह है मेरा कहानी।" डबडबाई आँखों से सोना कहा। जब सोना अपना कहानी बता दिया तो तारा और वह अंतरीक्ष भी मूकता से भर गई। तारा कुछ देर तक चुप रहा और कहा "सोना, तुम्हें तुम अपनी माँ-बाप के परिवार वालों के घर क्यों नहीं जाते?" सोने सोना तारा को जवाब नहीं दिया।

सोना जानता न्या कि वह एक लड़की है और उसे सभालने केलिए कोई भी नहीं आएगे। सोना को चुप रहते देख तारा किसी बात याद करकर उससे कहा "सोना ... मैं भूल गयी थी। तुम से तुम्हें मिलने केलिए दो लोग आए हैं।

सोना यह सुनकर अपनी घर की ओर चलता है। वहाँ सोना दो महिलायें से मिलते है जो सफ़ेद कपड़े पहने हैं - परियों की तरह। सोना को वह दो लोग देखता ही रह जाता है। सोना की घंघराले बाल बारिश की बादल जैसी थी। उसी आँखों में निहित चमक कुछ बोलना चाहती थी। सोना की होंठ गुलाब की पंखुडियाँ जैसे थी। सोना को देखकर एक महिला कहता है "सोना ... मैं भगवान की एक परी हूँ। तुम्हें हमारे साथ ले जाने केलिए आए हैं। क्या तुम हमारे साथ आओगी?"

यह सुनकर सोना को विशवास नहीं हुआ। वह अपनी रंग - फीके कपड़े को पकड़कर अपनी सर हिलाया - वह उसकी हाँ थी। सोना अपनी मन में खुश हुई और कहा "मैं ज़रूर आना चाहती

हूँ आपके साथ। पापा का कहना सच्च हुआ।
मेरी सपनों पंख देने वाला परी आखिर कार
आ ही गई। मेरी माँ, पापा और दादीजी की समय
हो गया था। वह मुझे अकेला छोड़कर चले
गए - एक दुनिया में जहाँ दुःख, नहीं होगा।
लेकिन मैं अपना सपना पूरा कर कर ही वह
दुनिया पर आऊँगा। मेरी जीवन का घंटी किसी
दिन रूक जाएगा। लेकिन, मेरी सपनों का समय
नहीं हो गई है। अब चलें, मेरी सपना की
पहला पड़ाव चढ़ने केलिए।" यह कहते वक्त
उसके हाथ में पहने घंटी तब भी चल रहा था।
"मेरी पापा की सपना की घंटी अभी रूकी
नहीं है।" यह कहते वक्त उसकी आँखें
सोने की तरह चमक रहा था।

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)